

भारत का आधुनिक इतिहास: एक विवेचना

Shrichand Kamat , skamat15@gmail.com

सार

आधुनिक इतिहास हमारे वर्तमान समय की परिस्थितियों का सामान्य वर्णन माना जा सकता है। इन परिस्थितियों को आधुनिकता का नाम दिया गया है। फ्रांसीसी सांस्कृतिक आलोचक जीन फ्रैंको लियोटार्ड ने आधुनिक इतिहास के स्वरूप की व्याख्या करते हुए इसे भव्य और प्रतिष्ठित वृत्तों को नकारने वाली परिस्थिति माना है। प्रबोधन काल से ही पश्चिमी जगत में मानव प्रगति का वर्णन करने के लिये इन वृत्तों का सहारा लिया गया। हमारे आज के आधुनिक युग में इस आधुनिक इतिहास या प्रबोधनकाल के सांस्कृतिक उत्पाद के खिलाफ या प्रगति की धारणा के विरुद्ध एक प्रतिक्रिया के रूप में जो बौद्धिक धारा उपजी है उसी का नाम आधुनिकतावाद है। कुछ बौद्धिक क्षेत्रों में स्वयं आधुनिक इतिहास ने अपनी कमियों को चुनौती देनी शुरू कर दिया है। इतिहास के छात्रों के लिये यह महत्वपूर्ण है कि आधुनिक इतिहास का हमारे लिये क्या महत्व है? आधुनिकतावाद ने प्रबोधन काल से स्थापित प्रगति की धारणा को चुनौती देकर प्रगति के विचार पर आधारित हमारी चिर-परिचित धारणाओं, हमारे समझदारी के आधारभूत पहलुओं, सामाजिक अस्तित्व और अर्थ पर भी सवाल खड़े किये हैं। सामान्य इतिहासकार इन धारणाओं का सहारा ले रहे थे।



मुख्य शब्द: आधुनिक इतिहास, प्रगति, चुनौती, बौद्धिक, प्रबोधनकाल, सांस्कृतिक आदि।

परिचय

भारत का आधुनिक इतिहास आमतौर पर भारत पर औपनिवेशिक शासन और वर्चस्व की अवधि को संदर्भित करता है। लगभग 17 वीं शताब्दी में भारतीय धरती पर अंग्रेजों का आगमन भारतीय इतिहास में आधुनिक युग की शुरुआत के रूप में माना जा सकता है। दो शताब्दियों के लिए, अंग्रेजों ने भारतीय भूस्वामियों पर पूर्ण अधीनता का प्रयोग किया जब तक कि स्वतंत्रता सेनानियों की धधकती हुंकार ने उनकी विदाई नहीं की। उनके शासन के दो सौ वर्षों में न केवल राजनीति और अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में



प्रभाव पड़ा, बल्कि शिक्षा, समाज और संस्कृति के क्षेत्र में काफी बदलाव लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

भारत में अंग्रेजों का आना

हालाँकि, ब्रिटिश भारत की धरती पर अपना पैर जमाने के लिए विदेशी शक्तियों में से नहीं थे। 15 वीं शताब्दी के समापन के वर्षों में, पुर्तगाली खोजकर्ता वास्को डी गामा दक्षिण भारत के कालीकट पहुंचे थे। तब से, फ्रांसीसी, डच और बाद में ब्रिटिश उपनिवेशवादियों ने भारत में अपना धन कमाया, जो अपार धन का देश था। 18 वीं शताब्दी तक, भारत में ब्रिटिश साम्राज्य ने अपना वर्चस्व पहले ही स्थापित कर लिया था। विशाल भारतीय क्षेत्र की विशेषता स्वतंत्र शासकों में एकता की व्यापक कमी थी, जिसका एक पहलू अंग्रेजों ने पूरा लाभ उठाया। 1739 में मुगलों के पतन और विभिन्न शासक राजवंशों के बीच निरंतर संघर्ष और विभिन्न भारतीय प्रांतों में सत्ताधारी दल के रईसों के बीच निरंतर संघर्ष हुआ, जो स्वतंत्र रूप से अपना वर्चस्व स्थापित करना चाहते थे। इस अवधि के दौरान भारत में कुछ सबसे शक्तिशाली शासक वंश मराठा, हैदर अली और मैसूर के टीपू सुल्तान, बंगाल के नवाब और रणजीत सिंह के नेतृत्व में सिख थे। अंग्रेजों ने अपने वर्चस्व कायम करने के लिए बड़े पैमाने पर व्यावसायिक शोषण को बढ़ावा दिया और जल्द ही ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की नीति को सर्वोच्च अधिकार के रूप में ब्रिटिश साम्राज्य के प्रभाव को हासिल करने के लिए प्रेरित किया। इस दौरान गवर्नर-जनरलों और वाइसराय ने अपने अधिकार को लागू करने के लिए बेईमान साधन प्राप्त किए।

ब्रिटिश साम्राज्य का प्रभाव

जबकि अंग्रेजों ने भारतीय आबादी पर उनके प्रभाव का पता लगाने में कोई कसर नहीं छोड़ी, वे शिक्षा, संस्कृति के साथ-साथ समाज के क्षेत्र में कुछ बदलाव लाने में भी प्रमुखता से शामिल थे। यह मुख्य रूप से उनके सांस्कृतिक साम्राज्यवादी डिजाइनों का एक रूप था। मैकाले, गवर्नर-जनरल की काउंसिल के एक प्रतिष्ठित सदस्य, अपने मिनट (1835) में, शास्त्र और ज्ञान के धन का तिरस्कार किया, जिसे भारत ने शिक्षा दी और अंग्रेजी शिक्षा की शुरुआत के लिए बुलाया, जिसे उन्होंने शिक्षित करने के लिए श्रेष्ठ



और आवश्यक माना। हालाँकि, राजा राम मोहन राय और ईश्वर चंद्र विद्यासागर जैसे प्रसिद्ध शिक्षाविद प्राचीन भारतीय धर्मग्रंथों और साहित्यिक कार्यों के साथ पश्चिमी शिक्षा के बौद्धिक रुझानों की नकल करने में सहायक थे। यह 18 वीं के अंत और 19 वीं शताब्दी की शुरुआत की ओर था, कि बंगाल में हिंदू कॉलेज या प्रेसीडेंसी कॉलेज जैसे कुछ प्रमुख शैक्षणिक संस्थान स्थापित किए गए थे। इस युग को अक्सर बंगाल पुनर्जागरण के रूप में जाना जाता है। शिक्षा के प्रसार का प्रसार हालांकि ईसाई मिशनरियों के साथ ईसाई धार्मिक सिद्धांतों के प्रसार से हुआ था, जो कि शिक्षा का विस्तार करने के कार्य का चित्रण किया गया था।

महिलाओं की शिक्षा का कारण विद्यासागर द्वारा प्रचारित किया गया, जिन्होंने बंगाल में महिलाओं के लिए लगभग तीस स्कूल स्थापित किए। राम मोहन राय जैसे समाज सुधारकों ने सती (1829) के उन्मूलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई या महिलाओं ने अपने पतियों के अंतिम संस्कार में अपना जीवन समर्पण कर दिया। 1856 में, ब्रिटिश सरकार द्वारा ईश्वर चंद्र विद्यासागर के संरक्षण में विधवा विवाह अधिनियम को मंजूरी दी गई थी।

1853 में भारतीय रेलवे की स्थापना में अंग्रेजों ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। यह भी उनके साम्राज्यवादी डिजाइनों को विस्तार देने का एक साधन था क्योंकि अंग्रेजों का मानना था कि रेलवे न केवल संचार स्विफ्टर का निर्माण करेगा, बल्कि साथ ही साथ वे आगे बढ़ेंगे। सैनिकों के तेजी से आंदोलन जो अपने वर्चस्व के खिलाफ तेजी से फैलने वाले विद्रोह और विद्रोह को रोकने के लिए बेहद आवश्यक हो गए थे।

ब्रिटिश वर्चस्व के खिलाफ विद्रोह

19 वीं शताब्दी में ब्रिटिश उपनिवेशवादियों के खिलाफ बड़े पैमाने पर संघर्ष और किसान विद्रोह की गवाही दी गई। अंग्रेजों द्वारा फैलाए गए कुटिल साधनों का सामना करने में असमर्थ, भारत के नागरिकों ने उपनिवेशवादियों के खिलाफ हथियार उठाए। 1860 के इंडिगो विद्रोह, संथाल विद्रोह (1855-56), दक्कन दंगे (1875) कुछ प्रमुख किसान आंदोलन थे और इन विरोधों का अंत 1857 के



विद्रोह के रूप में हुआ, जिसे लोकप्रिय रूप से सिपाही विद्रोह के रूप में जाना जाता है। 19 वीं सदी में राष्ट्रवादी संघर्ष के कुछ प्रमुख नेताओं में झाँसी की रानी लक्ष्मी बाई और तांतिया टोपे शामिल हैं। 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के जन्म के साथ इस राष्ट्रवादी उत्साह को बढ़ाया गया था। इस युग के दौरान, भारतीयों पर ब्रिटिश कार्रवाई की निंदा करने वाले विभिन्न साहित्यिक कार्यों को लिखा और प्रदर्शन किया गया था। इस तरह के आयोजनों के खिलाफ नाटकीय प्रदर्शन अधिनियम (1876) और वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट (1878) के तहत प्रेस की स्वतंत्रता पर अंकुश लगाने के लिए नियामक कार्रवाई की गई। 1905 में बंगाल के विभाजन का प्रस्ताव अंतिम स्ट्रॉ था जिसने भारतीय नागरिकों के बीच स्वतंत्रता की ज्वाला को प्रज्वलित किया।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम

20 वीं शताब्दी के राष्ट्रवादी संघर्ष को सरदार वल्लभभाई पटेल, भगत सिंह, बाल गंगाधर तिलक, खुदीराम बोस, लाल बहादुर शास्त्री, नेताजी सुभाष चंद्र बोस और महात्मा गांधी जैसे प्रमुख हस्तियों ने देखा था। खिलाफत आंदोलन, असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलन जैसे विभिन्न राष्ट्रवादी आंदोलनों ने स्वतंत्रता की दुहाई दी।

भारतीय स्वतंत्रता और विभाजन

अंत में 15 अगस्त 1947 को, सदियों के जोरदार संघर्ष के बाद, भारत ने स्वतंत्रता प्राप्त की और ब्रिटिश उपनिवेशों के बंधनों से मुक्त हो गया। भारत का विभाजन समाप्त हो गया था और पाकिस्तान का गठन उसके उत्तर-पश्चिमी सीमा क्षेत्र में हुआ था। जवाहरलाल नेहरू ने स्वतंत्र भारत के पहले प्रधान मंत्री के रूप में शपथ ली और देश को 26 नवंबर, 1950 को भारत के संविधान के कार्यान्वयन के साथ एक संप्रभु समाजवादी धर्मनिरपेक्ष लोकतांत्रिक गणराज्य के रूप में मान्यता दी गई।

उपसंहार

उत्तर-अनुभववादी इतिहासकार, इतिहास को एक साहित्यिक प्रदर्शन या तमाशा ही मानता है। इतिहास इतिहासकार द्वारा दिया गया अतीत के बारे में उसका स्वयं का एक बयान ही है। हर



ऐतिहासिक काल ज्ञान-अर्जन और उसके उपयोग के लिये अलग-अलग उद्देश्यों से प्रेरित होकर अलग-अलग मापदंडों का निर्धारण करता है। मिचेल फुको के अनुसार ज्ञान के निर्माण के मापदंड बहुदा सत्ता और शक्ति के सामाजिक वितरण पर भी निर्भर करते हैं। इन्हीं मापदंडों में भाषायी संरचना तथा उस काल की प्रवचनात्मक संरचना भी शामिल हैं। स्थान, समय, संस्कृति और भाषा इतिहासकार की अवधारणाओं को प्रभावित करते हैं और उसकी ऐतिहासिक कल्पना शक्ति को भी। इतिहासकार की ऐतिहासिक कल्पना-शक्ति अतीत के वर्णन को एक उद्देश्यपूर्ण क्रम में रखकर घटना की व्याख्या करती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:

- [1] गोयल, श्री राम (1988), नन्द मौर्य साम्राज्य का इतिहास : मेरठ, कसुमांजलि।
- [2] गौड़, शर्मा (सं. 2033), काशीनाथ, चाणक्य नीति दर्पण : वाराणसी, आदित्य प्रकाशन।
- [3] घई यू. आर. (2006), भारतीय विदेशनीति : जालन्धर, न्यू एकेडेमिक पब्लिशिंग कम्पनी।
- [4] चंद्र, विपिन (2007), लोकतन्त्र आपातकाल और जयप्रकाश नारायण : नई दिल्ली, अनामिका पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर।
- [5] चन्द्र विपिन, मुखर्जी मृदुला, मुखर्जी आदित्य (2002), आजादी के बाद का भारत (1947-2000) : दिल्ली विश्वविद्यालय, हिंदी माध्यम कार्यान्वय, निदेशालय।
- [6] चौधरी, राधाकृष्ण (1973), प्राचीन भारतीय राजनीति और शासन व्यवस्था : पटना, भारतीय भवन।
- [7] जयसवाल, काशीप्रसाद (1942) हिन्दु राजतन्त्र : काशी, नागरी प्रचारिणी सभा।
- [8] जायसवाल, सुरेन्द्र कुमार, (1998), हिन्दू राजशास्त्र : दिल्ली, साहित्य प्रकाशन, मालीबाड़ा।
- [9] जैन डॉ. पुखराज (2010), राजनीतिक विज्ञान के मूल आधार : आगरा, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स।



- [10] जैन प्रो. हुकम चन्द, माथुर डॉ. कृष्ण चन्द्र (2001) विश्व इतिहास (1500-1900) : जयपुर,
जैन प्रकाशन मंदिर।
- [11] जैन, पुखराज (2010) भारतीय राजनीतिक विचारक : आगरा, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स।